International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 723-725

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 723-725
www.allresearchjournal.com
Received: 10-09-2015
Accepted: 12-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भारतीय काव्य शास्त्र साहित्य जगत के लिए अमूल्य धरोहर है। हिन्दी साहित्य में काव्य सम्बन्धी अनेक मान्यताएं संस्कृत काव्य शास्त्र का अनुवाद भर ही हैं। वास्तव में अनेक वर्षों के विवेचन का सार ही संस्कृत काव्य शास्त्र है, जिसे सामान्यतः भारतीय काव्य शास्त्र कह कर पुकारा जाता है। भारतीय काव्यशास्त्र में अनेक काव्यशास्त्रीय सम्प्रदाय हैं जिन्होंने न केवल नई नई स्थापनाएं ही कीं अपितु एक दूसरे के खण्डनमण्डन द्वारा काव्य सिद्धान्तों को उच्च कोटि के सिद्धान्तों से अलंकृत कर दिया जो न केवल भारतीय काव्य शास्त्रियों अपितु विश्व के काव्य शास्त्रियो के लिए एक सन्दर्भ ग्रंथ की तरह प्रतिष्ठित हुआ है।1

भारतीय काव्यशास्त्र में अन्य सम्प्रदायों के अतिरिक्त वक्रोक्ति सम्प्रदाय अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्प्रदाय है जिसकी अनेक मौलिक स्थापनाएं आज भी स्वीकार्य हैं।भारतीय काव्य शास्त्र में वक्रोक्ति सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक हैं उनका समय ग्यारहवीं सदी माना जाता है। पाश्चात्य काव्य शास्त्र के विद्वान एवं प्रसिद्ध दार्शनिक वेदान्ते क्रोचे प्रसिद्ध काव्य सिद्धान्त अभिव्यंजनावाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। उनका समय सन् 1866–1952 तक का है। दोनों महान काव्य सिद्धान्त के प्रवर्तकों के बीच लगभग एक हजार वर्ष का अन्तराल है। फिर भी इनमें काव्य सिद्धान्त सम्बन्धी कहीं कहीं समानता का आभास होता है। इस समानता के कारण समय समय पर अनेक चर्चाएं भी चलीं, परन्तु इन सिद्धान्तों के तुलनात्मक विवेचन ने उस समय गति पकड ली जब हिन्दी के जाने माने विद्वान एवं प्रखर आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन्दौर में अपने भाषण में कहा कि– क्रोचे का अभिव्यंजनावाद भारतीय वक्रोक्तिवाद का ही एक विलायती रूप है।इसके पश्चात तो इस पर बहस प्रारम्भ हो गई तथा दोनों में साम्य वैषम्य पर गम्भीर चर्चाएं प्रारम्भ हो गईं। इन दोनों सिद्धान्तों में क्या समानता है क्या विषमता है इस पर विचार विमर्श करना आवश्यक है। इन दोनों सिद्धान्तों की मूल स्थापनाओं को जाने बिना इस सन्दर्भ में निर्णय करना कठिन है।सबसे पहले इन सिद्धान्तों की मूल स्थापनाओं का परिचय इस प्रकार है।

कुन्तक का वक्रोक्तिवाद

वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक माने गए है। उन्होंने वक्रोक्तिजीवितम् नामक ग्रंथ लिखा जिसमें वक्रोक्ति को काव्य की आत्मा सिद्ध किया है। उन्होंने वक्रोक्ति शब्द को व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है। उन्होने कवि का कर्म ही काव्य बताया है, कवेः कर्म काव्यम्। उन्होंने काव्य में वक्रोक्ति का महत्व प्रतिपादित करते हुए स्पष्ट कहा है कि काव्य–मर्मज्ञों को आनन्द देने वाली कविव्यापार से युक्त सुन्दर या वक्र–रचना में शब्द व अर्थ मिलकर काव्य बनाते हैं। उन्होंने शब्द और अर्थ को अलंकार्य और वक्रोक्ति को अलंकार बताया। वक्रोक्ति के सम्बन्ध में ही चर्चा करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया है कि वक्रोक्ति वह विचित्र उक्ति है जो सामान्य या लोकव्यवहार से अभिधात्मक रूप से भिन्न और प्रतिभा–सम्पन्न कवि के कौशल से निर्मित हो। 2 उन्होंने इस विचित्र कथन के तीन अर्थ बताए हैं–

1. शास्त्रादि में प्रयुक्त प्रसिद्ध शब्द अर्थ के साधारण प्रयोग से भिन्न
2. शब्द व अर्थ के प्रसिद्ध मार्ग से भिन्न
3. सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त शब्द–अर्थ से प्रयोग

उनके अनुसार वक्रोक्ति की सफलता का आधार इसी में है कि वह सहृदयों के चित्त में आनन्द का संचार कर दे। उन्होंने वक्रोक्ति के अभाव में अलंकार के अस्तित्व एव महत्व को स्वीकार नहीं कियां काव्य में वक्रोक्ति के होने पर चाहे उसमे रस,ध्वनि आदि न भी हेा तो भी उसमें काव्यत्व होता हैं। उन्होंने प्रत्येक उक्ति को काव्य और प्रत्येक काव्य की उक्ति में वक्रता की संभावना को भी प्रस्तुत किया। उन्होंने वर्ण, शब्द, प्रकृति, पद, वाक्य, प्रसंग व प्रबंध के आधार पर वक्रोक्ति के छः भेद माने हैं,जिसमें काव्य के लगभग सभी तत्वों का समावेश हो जाता है। कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति के बिना काव्य एक साधारण वार्तामात्र ही होगा।3

क्रोचे का अभिव्यंजनवाद

पाश्चात्य विद्वान क्रोचे कोई काव्यशास्त्री नहीं थे अपितु वे एक मीमांसक तथा तत्ववेता दार्शनिक थे। उनके कला संबंधी शास्त्र का नाम एस्थेटिक है जिसका हिन्दी में सौन्दर्य शास्त्र नाम से अनुवाद भी हुआ है। उनका अभिव्यंजना संबन्धी सिद्धान्त न केवल काव्य बल्कि सभी ललित कलाओं पर लागू होता है। क्रोचे आत्मवादी दार्शनिक हैं, इसलिए उन्होंने अपने ढंग से आत्मा की अन्तः सत्ता की प्रतिष्ठा की है।

उन्होंने अभिव्यंजनावाद में आत्मा की दो क्रियाएं मानी हैं– विचारात्मक और व्यवहारात्मक। व्यावहारिक क्रिया अथवा ज्ञान का आधार संकल्प माना गया है।उन्होंने व्यावहारिक ज्ञान के भी दो रूप माने हें–उपयोगी या आर्थिक तथा नैतिक। विचारात्मक ज्ञान के भी दो ही रूप उन्होंने स्वीकार किए हैं। स्वयंप्रकाशज्ञान और तर्क ज्ञान, स्वयं प्रकाश ज्ञान को प्रमेय या विशेष का ज्ञान तथा तर्कज्ञान को उन्होंने बुद्धि अर्थात् प्रमा द्वारा प्राप्त ज्ञान या सामान्य ज्ञान कहा है। क्रोचे के अनुसार तर्क से प्राप्त ज्ञान का संबन्ध निश्चयात्मक बुद्धि तथा पदार्थबोध से है और यह समष्टि या सहज ज्ञान है और इसी से ही दर्शन व विज्ञान का जन्म होता है।4

क्रोचे के अनुसार स्वयं प्रकाश ज्ञान का संबन्ध किसी पदार्थ या व्यष्टि से होता है और वह कल्पना द्वारा कला का उत्पादक बन जाता है। इस प्रकार का स्वयं प्रकाश ज्ञान तर्कज्ञान या बौद्धिकज्ञान से स्वतन्त्र होता है। स्वयं प्रकाशज्ञान को एक अलौकिक शक्ति कहा गया है जो किसी भावना को क्षण भर में अपनाकर उसे आकार व सुन्दर रूप प्रदान कर देती है, जिस तरह तर्क तक पहुंचने के लिए बुद्धि का सहार लिया जाता है,उसी प्रकार सहजज्ञान कल्पना से प्राप्त होता है। क्रोचे के अनुसार कला का सम्बन्ध स्वयं–प्रकाश ज्ञान से है। उसी को ही सहजज्ञान या सहजानुभूति कहते हैं। यह अभिव्यंजना–रूप होती है,जो सहजानुभूति अभिव्यंजना में मूर्त नहीं हो सकती, वह केवल संवेदन है उसे आत्मा अनुभव तो करती है परन्तु अभिव्यक्त नहीं कर पाती।5

क्रोचे के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति स्वभावतः कलाकार होता है क्योंकि प्रायः सभी में सहजानुभूति की क्षमता होती है। कलाकार सामान्य व्यक्ति से भिन्न होता है। जिस व्यक्ति में आत्मा की जटिल स्थितियों को अभिव्यक्त करने की शक्ति व प्रवृत्ति अन्य सामान्य व्यक्ति से अधिक होती है, वही कलाकार है। मनुष्य जन्मजात कवि होता हैं। उन्होंने कलासृजन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को पांच चरणों में बांटा है।6

1. अरूप संवेदन
2. अभिव्यंजना
3. आनन्दानुभूति
4. आंतरिक अभिव्यंजना या आंतरिक सहजानुभूति
5. कलाकृति का भौतिक मूर्तरूप

क्रोचे मानते हैं कि यह कलाकार की इच्छा पर निर्भर करता है कि वह अपनी सहजानुभूति अथवा आंतरिक अभिव्यंजना को बाह्य रूप प्रदान करे या नहीं। कला सहजानुभूति ज्ञान का ही एक रूप है जो अखण्ड है। क्रोचे कला या अभिव्यंजना के वर्गीकरण को ठीक नहीं मानते। उनके अनुसार अभिव्यंजना स्वयं में एक इकाई है, जाति नहीं। न ही किसी कला या काव्य का अनुवाद उचित है। उनके अनुसार अभिव्यंजना का एकमात्र उद्देश्य अभिव्यंजना ही होता है। किसी भी कला का उद्देश्य शिक्षण, कीर्ति धन, आदि नहीं हो सकता। आनन्द भी कला का सहचारी मात्र हैं उद्देश्य नहीं। जिस प्रकार बादलों के बरस जाने के बाद आकाश निर्मल हो जाता है, उसी प्रकार संकुल भावनाओं को अभिव्यक्त करने के बाद आत्मा भी उनसे मुक्त व निर्मल हो जाती है। कला की यही चरम परिणति है।7

आचार्य कुन्तक के वक्रोक्तिवाद व अभिव्यंजनावाद में साम्य

कुन्तक और क्रोचे के सिद्धान्तों में एकरूपता नहीं है फिर भी इन दोनों के सिद्धान्तों में कुछ साम्य अवश्य प्रतीत होता है जिसका विवरण इस प्रकार है।

1 दोनो ही सिद्धान्त अभिव्यंजनावाद को ही काव्य का प्राण तत्व मानते हैं।

2 कुन्तक और क्रोचे ने समान रूप से काव्य में कल्पना तत्व को प्रमुखता दी है।डॉ डे ने कुन्तक के वक्रोक्ति के सम्बन्ध में साफ ही कहा है–वक्रोक्ति का आधार कल्पना ही है।

3 दोनों ने ही उक्ति व अभिव्यंजना को अखण्ड व अविभाज्य तथा अद्वितीय माना है।

4 दोनों ही विद्वान सौन्दर्याभिव्यंजना और अभिव्यंजना में श्रेणियां नहीं मानते।

5 दोनो में सैद्धान्तिक समानता कुछ सीमा तक होने के बावजूद विषमता भी पर्याप्त है।

वक्रोक्तिवाद व अभिव्यंजनावाद में वैषम्य

1 आचार्य कुन्तक मूलतः काव्यशास्त्री हैं और उन्होंने काव्य के नियमों को सैद्धान्तिक रूप प्रस्तुत करने के लिए अलंकार शास्त्र,काव्यशास्त्र की रचना की जबकि क्रोचे काव्यशास्त्री नहीं थे अपितु एक दार्शनिक थे अतः दोनों के शास्त्रीय ग्रन्थों संबन्धी दृष्टिकोण में मौलिक अन्तर है।

2 आचार्य कुन्तक ने वक्रोक्ति–सिद्धान्त में बाह्य अंगों पर बल दिया । उन्होंने चमत्कारहीन व चमत्कारपूर्ण उक्तियों में भेद स्वीकार किया जबकि क्रोचे इसके विपरीत चमत्कारपूर्ण व चमत्कार हीन या असफल व अपूर्ण अभिव्यंजना का अस्तित्व ही नहीं मानते हैं। क्रोचे उक्ति को ही काव्य मानते हैं जबकि कुन्तक वक्रोक्ति को काव्य मानते हैं।

3 आचार्य कुन्तक ने जहां अलंकार, कविकर्मकौशल, वैदिग्धप्रर्णशैली आदि अंगों से युक्त काव्य–रूपी शरीर में वक्रोक्ति रूपी आत्मा की अवधारणा को स्वीकार किया हैजबकि क्रोचे ने सहजानुभूति को ही शरीर व आत्मा दोनों स्वीकार किया है।

4 कुन्तक के अनुसार वक्रोक्ति के लिए कवि को प्रयास व अभ्यास करना पडता है जबकि क्रोचे के अनुसार अभिव्यंजना अनायास ही प्राप्त हो जाती है।

5 आचार्य कुन्तक आनन्द प्राप्ति को काव्य का उद्देश्य मानते हैं, जबकि क्रोचे आनन्द को काव्य का उद्देश्य न मानकर उसे अभिव्यंजना का ही सहचारी मानते हैं।

6 आचार्य कुन्तक काव्य में विषयवस्तु के महत्व को स्वीकार करते हैं, जबकि क्रोचे के अभिव्यंजनावाद में विषयवस्तु नगण्य है।

इस तरह स्पष्ट है कि आचार्य कुन्तक के वक्रोक्तिवाद और क्रोचे के अभिव्यंजनावाद में पर्याप्त अन्तर है। डॉ नगेन्द्र के अनुसार शुक्ल जी के प्रहार का लक्ष्य वास्तव में अतिवादी थे इन अतिवादियों से इतने रुष्ट हो गए कि बेचारे क्रोचे और कुन्तक को उनका क्षोभ झेलना पडा। इस तरह आचार्य शुक्ल का कथन असंगत प्रतीत होता है कि क्रोचे का अभिव्यंजनावाद भारतीय वक्रोक्तिवाद का ही एक विलायती उत्पाद है। आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ने भी यही मत व्यक्त किया है कि क्रोचे का अभिव्यंजनावाद वक्रोक्ति से किसी भी प्रकार समानता नहीं रखता क्योंकि वक्रोक्ति में शुद्ध रूप से शब्दार्थ के कौशलपूर्ण नियोजन की बात की है जिसका विवकेशील बुद्धि से ही पूर्ण सम्बन्ध है, अन्तः प्रेरणा से नहीं। दूसरी बात यह है कि वक्रोक्ति में अभिव्यक्ति की बात ही नहीं उठती है।8 अतः दोनों के साम्य का प्रश्न ही नहीं उठता।

सन्दर्भ सूचि

1. डॉ कपिल देव द्विवेदी संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास पृ 67

2. आचार्य भरत मुनि भरत नाट्यम पृ 87
3. राजवंश सहाय भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास पृ 45
4. राममूर्ती त्रिपाठी भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त पृ112
5. राजवंश सहाय भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास पृ134
6. राजवंश भारतीयकाव्यशास्त्र का इतिहास पृ 85
7. डॉ रामचन्द्र तिवारी भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना पृ77
8. आचार्य कुन्तक वक्रोक्ति काव्यजीवितम् पृ 134